मुगलकालीन स्थापत्य कला - विशेषताएँ

1. इण्डो इस्लामिक शैली अर्थात् ट्राबियट एवं आरकुएट
   - ट्राबियट — बल्ली/शहतीर
   - आरकुएट — गुम्बद + मेहराब + बुर्जी + अरबस्क
     - कुरान की आयतें
     - ज्यामितीय अंकन

2. इण्डो-इस्लामिक के साथ-साथ बौद्ध एवं ईरानी प्रभाव
   - ईरानी — हुमायूँ का मकबरा - दोहरी गुम्बद
   - बौद्ध — पंचमहल, हवामहल, सिकन्दरा का मकबरा

3. लाल बलुआ पत्थर एवं संगमरमर का प्रयोग
   - लाल बलुआ पत्थर — आगरा एवं दिल्ली का लालकिला
   - संगमरमर — ताजमहल

4. परम्परागत शहतीर एवं कंगूरनुमा प्रणाली

5. पाँचमंजिला इमारत - पंचमहल, हवा महल, सिकन्दरा का मकबरा

6. पित्रादुरा - बहुमूल्य पत्थर एवं हीरे जवाहरात की जड़ावट - एत्मादुद्दौला का मकबरा

7. कुरान की आयतें व ज्यामितीय अंकन

8. अमरूदी गुम्बद

9. दाँतेदार मेहराब

10. चारों कोनों पर मीनार — ताजमहल

11. त्रिगुम्बदीय संरचना - ताजमहल एवं जामा मस्जिद

Scanned with CamScanner

* स्थापत्य कला *

- विशेषतायें
- विकास

विशेषतायें

⇒ इण्डो - इस्लामी शैली
  - ⇓ अर्थात् त्राबियत एवं अरकुएट का मिश्रण
    - त्राबियत → बल्ली / शहतीर
    - अरकुएट → गुम्बद + मेहराब + अरबस्क
      - अरबस्क → अलंकरण

⇒ बलुआ लाल पत्थर का प्रयोग

⇒ चार बाग शैली

⇒ पित्रादुरा शैली का प्रयोग
  - ↓ बहुमूल्य पत्थरों, हीरे जवाहरात से जड़ावट

विशेषतायें :-

मुगल वास्तुकला में भारतीय इस्लामी शैली का सुंदर समन्वय मिलता है। इसमें हिंदु, बौद्ध, राजपूत, ईरानी वास्तुकला शैलियों का समावेश मिलता है। भारतीय शैली में त्राबियत (बल्ली व शहतीर) तथा इस्लामी शैली में अरकुएट (गुम्बद एवं मेहराब) तथा इसमें अलंकरण के लिए अरबस्क शामिल है। इन्ही का समन्वय मुगल स्थापत्य में मिलता है।

Scanned with CamScanner

⇒ भवनों में अधिकांशतः बलुआ पत्थर एवं संगमरमर का प्रयोग किया गया और संगमरमर पर हीरे-जवाहरात से की गई जड़ावट पित्रादुरा के नाम से जानी जाती है।

⇒ लोदियों के समय शुरू हुई 'चार बाग शैली' का यहां पूर्ण विकास दिखाई पड़ता है। इमारत के बाहरी तरफ बाग के लिए भूमि छोड़ी गई और मध्य में भवन बने।

विकास -

बाबर एवं हुमायूं के काल में वास्तुकला का विकास आरम्भ हुआ। किंतु युद्धों में संलग्न रहने के कारण व्यापक पैमाने पर निर्माण कार्य नहीं हो सका। अकबर के काल में इसका विकास हुआ और अकबर भवन निर्माण पर विशेष बल देता था। अबुल फजल ने लिखा कि "बादशाह सुंदर भवनों के निर्माण की योजना बनाता है तथा अपने मस्तिष्क एवं हृदय के विचारों को पत्थरों से रूप प्रदान करता है।" फतेहपुर सीकरी में बने भवन अकबर को भवननिर्माता की कोटि में रखते हैं जहां पंचमहल, जहांगीरी महल, बीरबल की काठी, बुलंद दरवाजा आदि बने हुए हैं।

⇒ अकबर के काल में हुमायूं के मकबरे का निर्माण हाजी बेगम ने कराया। इसमें ईरानी शैली पर

Scanned with CamScanner

आधारित गुम्बदों का प्रयोग किया गया। इसे ताजमहल का पूर्व रूप माना जाता है। ताजमहल को यदि एक वफादार आशिक का खिराज कहा जा सकता है तो हुमायूं के मकबरे को एक वफादार बीबी की महबूबाना पेशकश कहा जा सकता है।

⇒ जहाँगीर के काल में - इस काल में सिकंदरा स्थित अकबर का मकबरा बनाया गया जिसमें निर्मित जालियाँ अत्यंत उल्लेखनीय है। इसी समय नूरजहाँ द्वारा आगरा में एतमाउद्दौला का मकबरा बनवाया गया जिसमें पहली बार पित्राद्रा शैली का प्रयोग किया गया है।

शाहजहाँ के काल में - शाहजहाँ का काल मुगल स्थापत्य का स्वर्णकाल माना जाता है। रोमन सम्राट आगस्टस ने कहा कि "मैंने ईंट का रोम पाया था और उसे संगमरमर का बना दिया"। उसी तरह शाहजहाँ ने भी पत्थरों से निर्मित मुगल नगरों को पाया और उसे संगमरमर से सजाया। शाहजहाँ के स्थापत्य के संदर्भ में यह कहा जाता है कि यदि सम्पूर्ण ऐतिहासिक साहित्य नष्ट भी हो जाये तो शाहजहाँकालीन स्थापत्य तत्कालीन इतिहास का वर्णन करने में पूर्ण सक्षम है।

⇒ शाहजहाँ के काल में संगमरमर का व्यापक

Scanned with CamScanner

प्रयोग हुआ और ये संगमरमर मकराना से आते थे। साथ ही पित्रादुरा शैली का आकर्षक प्रयोग किया गया। ताजमहल इस निर्माण का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है। इसी तरह महलों में अब बहुस्तरीय मेहराब का प्रयोग किया गया और बंगाली शैली में मुड़े हुए कंगूरे एवं छज्जेदार छतों का प्रयोग किया गया।

⇒ इस काल में दिल्ली का लाल किला, रंगमहल, जामा मस्जिद अत्यंत विशाल और उल्लेखनीय भवन हैं। आगरा में निर्मित ताजमहल को विद्वान हॉवेल ने 'भारतीय नारीत्व की साकार प्रतिमा' कहा। वस्तुतः यह भवन मुगल काल में नारी के प्रति सम्मान को दर्शाता है।

औरंगजेब के काल में :- मुगल वास्तुकला ने बाबर, हुमायूँ के काल में आँखे खोली। अकबर, शाहजहाँ के संरक्षण में इस कला ने अपनी युवावस्था को प्राप्त किया। तो औरंगजेब के काल में इसने वृद्धावस्था को प्राप्त किया। इस काल में राजनीतिक, आर्थिक कारणों से परिचालित होकर औरंगजेब ने भवन निर्माण में रुचि नहीं ली। फिर भी औरंगाबाद में 'राबिया उद्दरौनी का मकबरा' निर्मित कराया। इसे दूसरा ताज कहा जाता है जिसे ताज की भद्दी नकल कहा जाता है। तो लाहौर में बादशाही मस्जिद का निर्माण कराया।

Scanned with CamScanner